पाठ 12. बचपन

पाठ का परिचय

यह पाठ गांधी जी के बचपन पर आधारित है। गांधी जी का बचपन सुदामापुरी में बीता। वहीं उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। सात वर्ष की आयु में वे राजकोट चले गए। वहीं के विद्यालय में भर्ती हुए। वे संकोची स्वभाव के थे। परंतु सच्चाई और ईमानदारी उनमें उस समय भी थी। एक बार शिक्षा विभाग के कोई अफ़सर निरीक्षण के लिए आए। उन्होंने बच्चों को अंग्रेज़ी के पाँच शब्द लिखने के लिए कहा। सभी बच्चों ने सब शब्द सही लिखे केवल गांधी का एक शब्द गलत था। अध्यापक उन्हें बार-बार दूसरे बच्चे की कॉपी देखकर उस शब्द को ठीक करने का इशारा करते रहे परंतु वे नहीं समझे। बाद में उन्हें बताया गया। वे तो सपने में भी नहीं सोच सकते थे कि अध्यापक उन्हें ऐसी सलाह दे सकते हैं। 'श्रवण पितृ-भक्ति नाटक' पुस्तक का गांधी जी के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हीं दिनों उन्होंने हरिश्चंद्र की कथा का नाटक देखा तथा हरिश्चंद्र का दुख देखकर वे बार-बार रोए।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हमें भी अपने जीवन में सत्य और ईमानदारी के साथ आगे बढ़ना चाहिए। अच्छी चीज़ें सीखते जाना चाहिए। और गलत बातों को छोड़ते जाना चाहिए।

पाठ का वाचन

एक-एक पंक्ति का शुद्ध उच्चारण सहित वाचन करें। पंक्ति में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताएँ। वाक्य के आशय को स्पष्ट करें। बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछकर यह सुनिश्चित करते रहें कि वे पाठ को समझ रहे हैं। फिर बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। उनके उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

अध्यापक/अध्यापिका निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर कक्षा में चर्चा प्रारंभ करें –

- क्या तुमने कभी नकल की है?
- नकल करने से क्या हानियाँ हो सकती हैं?
- क्या तुम भी श्रवण की तरह आज्ञाकारी संतान बनना चाहोगे?
- सत्य और ईमानदारी के गुणों को कैसे विकसित किया जाता है?